गालो समाज का दर्शन

डॉ. तादाम रूती
सहायक प्रोफेसर
गवर्मेंट कॉलेज दोइमुख
पापुम पारे, अरुणाचल प्रदेश

सारांशिका:
इस आलेख में अरुणाचल प्रदेश के गालो समाज का दर्शन अर्थात् जीव-जगत, भगवान, आत्मा-परमात्मा, प्रकृति आदि से जुड़ी मान्यताओं पर दृष्टि डाली गई है। आलेख के आरम्भ में दर्शन शब्द को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। तत्पश्चात गालो जनजाति का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस तरह आगे गालो समाज की आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-सृष्टा, जीव-जगत आदि मान्यताओं पर चर्चा की गई है। गालो में बहुत सारे देवी-देवताएँ हैं और अधिकतर निर्गुण-निराकार रूपों में पूजे जाते हैं। मिथकों के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्माण्ड एक अथाह शून्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। माना जाता है कि इसी अथाह शून्य से 'जिमी आनअ' (स्वयंभू देवी/शून्य-माता) की उत्पत्ति हुई। गालो में विश्वास किया जाता है कि 'जिमी आनअ' ने ही पृथ्वी तथा संसार के सभी जीव-जन्तुओं का निर्माण किया। गालो में यह माना जाता है कि इस संसार में जो भी है उसका कोई न कोई मालिक अवश्य होता है। इसीलिए गालो में हरेक प्राकृतिक वस्तुओं के लिए देवी-देवताएँ हैं जैसे- 'आनअ दोञी' अर्थात सूर्य को माता के रूप में, 'आबो पोलो' अर्थात चन्द्र को पिता के रूप में, 'यापोम-याजे' (वन की देवी-देवता), बड़े-बड़े वृक्षों का देवता, जीतअ-बोतअ (घर का देवता), आलि-आम्पिर (आन्न की देवी), नदी का देवता, पका (शिकार का देवता), आइ-आगाम (अच्छी किस्मत एवं समृद्धि) आदि। गालो लोगों का विश्वास है कि इन सभी देवी-देवताओं की कृपा से ही वे स्वस्थ रहते हैं और समृद्ध होते हैं। तरह हम कह सकते हैं कि गालो समाज बहुदेव वादी है और इनकी मान्यताओं को हम लोकतांत्रिक कह सकते हैं जो सर्वात्मवाद में विश्वास करते हैं।

दर्शन को सभी ज्ञान की माता (स्रोत) कही जाती है। यह संस्कृत की 'दृश' धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ 'देखना या जिसे देखा जाए' होता है यानी जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व की अनुभूति हो। अंग्रेजी में जो दर्शन के पर्याय 'फिलॉसोफी' है उसका अर्थ 'ज्ञान के प्रति अनुराग' है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार 'दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक विवेचन है"। दर्शन-शास्त्र के संदर्भ में दर्शनकोश में इस तरह व्याख्यायित किया गया है- 'स्वत्त्व (अर्थात प्रकृति तथा समाज) और मानव-चिन्तन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान।' इसमें आगे लिखते हैं- 'दर्शन एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित होने लगा। जगत के विषय में सामान्य दृष्टिकोण का विशदीकरण करने, उसके सामान्य मूलों तथा नियमों का अध्ययन करने, यथार्थ के विषय में चिन्तन की तर्कबुद्धिसंगत विधि, तर्क तथा संज्ञान के सिद्धान्त विकसित करने की आवश्यकता से दर्शन का विज्ञान के रूप में जन्म हुआ।' दर्शन शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है और विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न विद्वानों ने इसका अलग-अलग अर्थ में ग्रहण किया परन्तु इसका सर्वसम्मत परिभाषा इस प्रकार हो सकती है- दर्शन ज्ञान की वह शाखा है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव के वास्तविक स्वरूप सृष्टि-सृष्टा, आत्मा-परमात्मा, जीव-जगत, ज्ञान-अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने का साधन और मनुष्य के करणीय और अकरणीय कर्मों का तार्किक विवेचन किया जाता है। इस प्रकार एक जाति या समुदाय के दर्शन को एक आलेख में व्याख्यायित करना संभव नहीं है।

बीज शब्द:
दर्शन, गालो, समाज, आत्मा-परमात्मा, प्रकृति, जीव-जगत, दोञी-पोलो, यीरनअ-गोनअ, दोञी-पोलो, सीतुम-जोरे, जीतअ-बोतअ, आलि-आम्पिर, पका-कातअ, दिगो-बारजी, आइ-आगाम, निर्गुण-निराकार देवी-देवता आदि।

गालो जनजाति अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। गालो जनजाति को देश के अन्य जनजातियों एवं आदिवासियों की तुलना में काफी अलग और प्रगतिशील माना जा सकता है। इसकी संस्कृति-परम्परा तथा सामाजिक व्यवस्था बहुत समृद्ध और विकसित है। आधुनिक शिक्षा का आगमन इस क्षेत्र में बहुत विलम्ब से हुआ फिर भी इसकी स्थिति अपेक्षा से अधिक संतोषजनक है। गालो समाज के बारे में यह कहना कोई अतिशयोक्ति या अहंकार की बात नहीं होगी कि यह अरुणाचल प्रदेश की लगभग छब्बीस जनजातियों में सबसे प्रगतिशील समुदायों में से एक है। इसकी कुल जनसंख्या २०११ की जनगणना के अनुसार लगभग डेढ़ लाख है। जनसंख्या की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश में यह ञिशी और आदी के बाद तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। गालो जनजाति अरुणाचल प्रदेश के मध्य भाग में स्थित छः जिलों में बसी हुई है- वेस्ट सियाङ, लोअर सियाङ, ईस्ट सियाङ, लप्पा रादा, शी योमी तथा अपर सुबनसिरी। इन जिलों के अतिरिक्त अरुणाचल के कई जिले में यह बसने लगी है।

विश्व के हर समाज का अपना नियम-कानून होता है, उसकी अपनी आस्था और मान्यताएँ होती हैं जिसके आधार पर समाज व्यस्थित रूप और सुचारू ढंग से चलता है। आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-सृष्टा, जीव-जगत आदि के विषय में हर समाज की अपनी अपनी मान्यताएँ एवं विश्वास है। गालो जनजाति में भी इन सब के विषय में अपनी मान्यताएँ है, हालाँकि आधुनिक शिक्षा एवं लेखन परम्परा के अभाव में कभी इन विषयों पर गालो में व्यवस्थित और विधिवत तरीके से अध्ययन नहीं किया।

विश्व के हर समाज का अपना नियम-कानून होता है, उसकी अपनी आस्था और मान्यताएँ होती हैं जिसके आधार पर समाज व्यस्थित रूप और सुचारू ढंग से चलता है। आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-सृष्टा, जीव-जगत आदि के विषय में हर समाज की अपनी अपनी मान्यताएँ एवं विश्वास है। गालो जनजाति में भी इन सब के विषय में अपनी मान्यताएँ है, हालाँकि आधुनिक शिक्षा एवं लेखन परम्परा के अभाव में कभी इन विषयों पर गालो में व्यवस्थित और विधिवत तरीके से अध्ययन नहीं किया। इसलिए दर्शन या दर्शन शास्त्र का विधिवत विकास इस समाज में नहीं हो पाया। फिर भी इस पत्र में गालो जनजाति के मिथकों, लोक-विश्वासों, लोक-मान्यताओं, पूजा-पद्धत्तियों आदि के आधार पर सृष्टि के मूल तत्त्वों यानी ईश्वर, जीव, जगत, प्रकृति जैसे विषयों पर चर्चा की गई है।

ईश्वर एक आशा है, विश्वास है, प्रेरणा है- सकारात्मक सोच का, सत्कर्म का। इसलिए विश्व के लगभग सभी समुदायों में परम शक्ति यानी ईश्वर की परिकल्पना की गई है। सृष्टि के निर्माण कर्त्ता तथा सृष्टि का चालक उस अज्ञात सत्ता को जानने का सतत प्रयास हर समाज ने किया है। इसी अज्ञात शक्ति की खोज करते हुए किसी ने एक परम तत्त्व में विश्वास किया तो किसी ने अनेक शक्तियों में विश्वास किया। जो एक ईश्वर में विश्वास करते हैं उसे 'एकेश्वरवादी' कहा गया तथा अनेक ईश्वर में विश्वास करने वालों को 'बहुदेववादी या अनेकेश्वरवादी' कहा गया। गालो समाज अनेकेश्वरवाद में विश्वास करता है। गालो में बहुत सारे देवी-देवताएँ हैं जैसे- यीरनअ-गोनअ, दोञी-पोलो, सीतुम-जोरे, जीतअ-बोतअ, आलि-आम्पिर, पका-कातअ, दिगो-बारजी, आइ-आगाम आदि। ये सब देवी देवताएँ अधिकतर निर्गुण-निराकार रूपों में पूजे जाते हैं। मिथकों के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्माण्ड एक अथाह शून्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। माना जाता है कि इसी अथाह शून्य से 'जिमी आनअ' (स्वयंभू देवी/शून्य-माता) की उत्पत्ति हुई। यह परिकल्पना बहुत हद तक हिन्दुओं से मिलती-जुलती है क्योंकि हिन्दुओं में भी विश्वास किया जाता है कि ब्रह्माण्ड में अथाह शून्य थी जिसके पश्चात 'स्वयंभू' अर्थात 'ऊँ कार' की गूँज से परमात्मा की उत्पत्ति हुई। गालो में विश्वास किया जाता है कि 'जिमी आनअ' ने ही पृथ्वी तथा संसार के सभी जीव-जन्तुओं का निर्माण किया। जिमी आनअ के अतिरिक्त गालो में बहुत सारे देवी-देवताओं की परिकल्पना की जाती है। इस समुदाय के लोग प्रकृति के बहुत करीब रहने के कारण प्राकृतिक वस्तुओं में देवी-देवताओं को देखते हैं। गालो में यह माना जाता है कि इस संसार में जो भी है उसका कोई न कोई मालिक अवश्य होता है। इसीलिए गालो में हरेक प्राकृतिक वस्तुओं के लिए देवी-देवताएँ हैं जैसे- 'आनअ दोञी' अर्थात सूर्य को माता के रूप में, 'आबो पोलो' अर्थात चन्द्र को पिता के रूप में, 'यापोम-याजे' (वन की देवी-देवता), बड़े-बड़े वृक्षों का देवता, जीतअ-बोतअ (घर का देवता), आलि-आम्पिर (आन्न की देवी), नदी का देवता, पका (शिकार का देवता), आइ-आगाम (अच्छी किस्मत एवं समृद्धि) आदि। गालो लोगों का विश्वास है कि इन सभी देवी-देवताओं की कृपा से ही वे स्वस्थ रहते हैं और समृद्ध होते हैं। गालो समुदाय में विश्व के अन्य धर्मों की तरह नियमित रूप से पूजा-पद्धत्ति नहीं होती। इसके लिए कोई बाध्यता नहीं होती। परिवार में जब कोई अस्वस्थ होता है या दुर्घटना घटित होती है तभी पूजा या अनुष्ठान करते हैं और साल-दो सालों में जब आवश्यकता अनुभव करते हैं तब भी परिवार के कल्याण के लिए पूजा या अनुष्ठान की जाती है। इन देवी-देवताओं के अतिरिक्त प्रेतात्माओं तथा शैतानों

की भी परिकल्पना की गई है जिसे 'उयु-ओरोम' कहते हैं। जो भी अशुभ या अनहोनी घटनाएँ होती हैं वे प्रेतात्माओं के कारण ही होती है। इन प्रेतात्माओं के कारण अगर कोई पीड़ित होता है तो उसके निवारण के लिए 'ञिबुह' (पुजारी) के द्वारा पूजा या अनुष्ठान की जाती है जिसमें ञिबुह लोकतांत्रिक ढंग से प्रेतात्माओं के साथ वार्तालाप करते हैं और उन्हें संतुष्ट करने के लिए उपहार स्वरूप पालतू पशु-पक्षियों की बलि चढ़ाई जाती है जिसे 'उयु मोनाम' कहते हैं। इस तरह से दोनों में समझोता हो जाता है। गालो में यह भी विश्वास किया जाता है कि 'उयु-ओरोम' अकारण लोगों को परेशान नहीं करते। जाने-अनजाने जब कोई व्यक्ति उन्हें परेशान करता है या उनकी राह में बाधा पहुँचाता है तभी वह भी मनुष्य को परेशान करता है।

धरती और प्रकृति जीवन का आधार है इसलिए सभी दर्शनों में इसपर पृथक-पृथक मान्यताएँ हैं। किंवदन्तियों और उपाख्यानों में विश्वास करने वाले इसे ईश्वर का निर्माण मानते हैं जबकि विज्ञान में विश्वास करने वाले इसे क्रमागत विकास (एवोलुशन थियोरी) मानते हैं। गालो समुदाय की मान्यताओं एवं मिथकों के अनुसार 'जिमी आनअ' ने सृष्टि का निर्माण किया। उन्होंने धरती और आकाश बनाया और दोनों के मिलन से अन्य सभी सांसारिक जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति हुई। धरती को गालो में 'सिची आनअ' कहते हैं तथा आकाश को 'मदो आबो'। अर्थात धरती को माता कहा जाता है और आकाश को पिता। इसीलिए गालो समाज में धरती में विद्यमान समष्ट वस्तुओं तथा प्राणियों के लिए आदर, सह-निवास तथा सामुहिक विकास का भाव है। वे कभी भी शोषण की नीति में विश्वास नहीं करते। उनका मानना है कि आवश्यकताओं से अतिरेक उपभोग करना पाप है। ऐसे लोभियों को ईश्वर या देवी-देवता देखता है जो उसके अनुचित कार्य के लिए दण्ड देता है। आज विश्व में मनुष्य अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए धरती का तथा अन्य संसाधनों के लिए धरती पर जो अत्याचार एवं शोषण-ढोहन कर रहा है, इससे धरती धीरे-धीरे मर रही है। ऐसी स्थिति में गालो समाज में धरती के साथ सह-निवास तथा सौहार्द की परिकल्पना और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। यह दावा नहीं कर सकता कि यहीं जीवन जीने का श्रेष्ठ मार्ग है परन्तु यह मार्ग समष्ट विश्व के कल्याण के लिए एक अच्छा विकल्प जरूर हो सकता है। गालो समुदाय में इसी सार्वभौमिक कल्याण तथा उन्नति की बात करते हैं।

धरती और प्रकृति जीवन का आधार है इसलिए सभी दर्शनों में इसपर पृथक-पृथक मान्यताएँ हैं। किंवदन्तियों और उपाख्यानों में विश्वास करने वाले इसे ईश्वर का निर्माण मानते हैं जबकि विज्ञान में विश्वास करने वाले इसे क्रमागत विकास (एवोलुशन थियोरी) मानते हैं। गालो समुदाय की मान्यताओं एवं मिथकों के अनुसार 'जिमी आनअ' ने सृष्टि का निर्माण किया। उन्होंने धरती और आकाश बनाया और दोनों के मिलन से अन्य सभी सांसारिक जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति हुई। धरती को गालो में 'सिची आनअ' कहते हैं तथा आकाश को 'मदो आबो'। अर्थात धरती को माता कहा जाता है और आकाश को पिता। इसीलिए गालो समाज में धरती में विद्यमान समष्ट वस्तुओं तथा प्राणियों के लिए आदर, सह-निवास तथा सामुहिक विकास का भाव है।

कारण जैसा भी रहा हो गालो समुदाय प्राचीनकाल से ही प्रकृति की पूजा करते आई है। प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा करने के पीछे विद्वानों में मतेक्य नहीं है। अधिकतर लोगों का मानना है कि मनुष्य प्राकृतिक ताकतों को जब नियंत्रित नहीं कर पाए या जीत नहीं पाए तो उसके डर से उसकी पूजा प्रारंभ किया। कुछ लोगों का मानना है कि जब मनुष्य प्राकृतिक शक्तियों को समझ नहीं सके अर्थात उसकी रहस्यमयी स्थिति के कारण उसकी पूजा प्रारंभ किया। यथा, जो कुछ भी कारण रहा हो, मनुष्य ने प्राकृतिक वस्तुओं का आदर-सत्कार या पूजा-अर्चना किया और आज भी बहुत सारे समुदाय प्रकृति को पूजते हैं। गालो समाज में भी वन-पर्वत, बड़े-बड़े वृक्ष, नदी, झील-सरोवर आदि की पूजा की जाती हैं। बीहड़ वन में जाकर आप मनमानी नहीं कर सकते। आप उसमें जाकर शोर-शराबा नहीं कर सकते, यहाँ तक कि आप बिना अनुमति के शौच नहीं जा सकते। ऐसे करने से वन की देवी (यापोम) क्रोधित हो सकती है और दण्ड दे सकती है। इसलिए गालो व्यक्ति जब भी अज्ञात क्षेत्र में जाता है तो उस क्षेत्र के मालिक/मालकिन यानी देवी/देवता से अनुमति लेकर ही शौच जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाए तो इस तरह की मान्यताओं के पीछे कई सकारात्मक कारण छिपे होते हैं। जंगल में जाते समय वहाँ के जन-जीवन की दिनचर्या में आप खलल नहीं डाल सकते। पशु-पक्षी अपने नैसर्गिक तरीके से जीवन यापन करता है उसमें मनुष्य उसके क्षेत्र में हस्तक्षेप कर शोर-शराबा करके उनकी शान्ति में विघ्न डालता है जो कि सही नहीं है। आज मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति से बहुत दूर हो गया है। प्रकृति हमारी हर जरूरतों की पूर्ति करती है पर मनुष्य के स्वार्थ की पूर्ति वे नहीं कर सकती। स्वार्थ की

कोई सीमा नहीं होती इसलिए प्रकृति के साथ सद्भावना नहीं रखते हुए उसका शोषण हो रहा है। ऐसी स्थिति में पर्यावरण संरक्षण की बात अब विश्व के सभी राष्ट्रों का चिन्ता का विषय बना हुआ है। प्रकृति के संरक्षण पर वक्तव्य देते हुए ईशा फाउंडेशन के प्रमुख सद्गुरु जग्गी वासुदेव का कहना है- 'बिना कीड़े-मकौड़े के धरती में जीवन समाप्त हो जाएगा, बिना पशु-पक्षियों के भी धरती में जीवन नहीं रहेगा परन्तु मानव जाति के बिना जीवन खूब फूलेगा और फलेगा।' उनका कथन बहुत हद तक सत्य है अर्थात्मनुष्य के स्वार्थों के कारण धरती मर रही है। ऐसे में गालो समाज का प्रकृति के साथ जो संबंध है वह और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि गालो संस्कार में शोषण की प्रवृत्ति नहीं है। हमारे पूर्वजों ने शायद शोषण वाली प्रवृत्ति को नियंत्रित करने के लिए ही इसे संस्कृति के साथ जोड़ा होगा।

पहले ही अवगत करा चुके हैं कि गालो किंवदंतियों और मिथकों के अनुसार संसार के सभी जीवन की उत्पत्ति एक ही माता-पिता से हुई (मदो और सिची अर्थात आकाश और धरती)। तानी समुदाय के आदि पुरुष 'आबो-तानी' का जन्म भी 'मदो और सिची' से ही हुआ। 'आबो तानी' ने अपने वंश को आगे बढ़ाने के लिए सभी तरह के प्राणियों तथा वस्तुओं के साथ विवाह किया। जैसे- 'पजक' (एक चिड़िया का नाम), मेंढक, सूखे पत्ते आदि। जब इन सब से अभीष्ट वंशज प्राप्त नहीं हुआ तो अंत में 'आनअ दोञी' (सूर्य माता) की पुत्री 'दोञी मुमसी उर्फ दोञी यायी' से विवाह किया जिससे उनको अपनी तरह शकल-सूरत वाली पुत्री प्राप्त हुई। स्त्री के अभाव में 'आबो-तानी' ने अपनी पुत्री के साथ ही सहवास कर अपनी पीढ़ी को आगे बढ़ाया। इस तरह मानव जाति का विकास हुआ। अन्य प्राणियों का विकास भी इसी तरह हुआ। गालो समुदाय में आत्मा की परिकल्पना भी की गई है। इनका विश्वास है कि हरेक जीव में आत्मा होती है। जीव की मृत्यु के बाद उसकी 'याजे-यालो' (आत्मा) उयु मोको (परलोक) चली जाती है। गालो में स्वर्ग और नरक जैसे अलग से अस्तित्त्व नहीं है। जिसकी सामान्य मृत्यु होती है उसकी आत्मा 'उयु मोको' चली जाती है परन्तु जिसकी मृत्यु अकाल या दुर्घटनावश होती है उसकी आत्मा 'ओरोम' (प्रेतात्मा) बनकर इसी जगत में रहती है। व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा पाँचवीं रात को अपना बचे-कुचे सामान वापस लेने के लिए वापस आती है। उसके बाद वह 'उयु मोको' चली जाती है। एक बार 'उयु मोको' जाने के बाद वह वापस नहीं आती है, वही बस जाती है। इसे हम मोक्ष भी कह सकते हैं परन्तु मोक्ष में आत्मा परमात्मा में विलय हो जाती है परन्तु उयु मोको में जाने से इस तरह विलय नहीं होती; उसका अलग अस्थित्त्व बना रहता है। गालो लोग कर्म फल में भी विश्वास करते हैं जो इसी जगत में या परलोक दोनों में प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार फल मिलता है इस धारणा के कारण भी मनुष्य कुकर्म करने से डरता है। गालो में यह विश्वास किया जाता है कि हरेक प्राणी का मालिक (देवता) होता है और बिना उसकी अनुमति के किसी भी जीव की हत्या करना अपराध या पाप है। अगर किसी की हत्या करते हैं तो उसके बदले कुछ उपहार देना होता है। ऐसा नहीं करने पर उस अपराध की सज़ा भूगतना पड़ता है। इसलिए जब भी शिकार करते हैं तो 'दिगो लिन्नाम' (अनुष्ठान) करनी होती है जिसमें 'यापोम' (वन की देवी/पशु-पक्षियों का मालकिन) का क्रोध को शान्त करने के लिए वस्तु भेंट करके उन्हें संतुष्ट किया जाता है। बाघ या हाथी को मारना मनुष्य की हत्या का बराबर है इसलिए गालो में बाघ और हाथी का शिकार नहीं करते और अगर बाध्य होकर मार भी दिया तो आजीवन कुछ-कुछ नियमों का पालन (विधि निषेध) करना होता है। अन्य जीवों को मारने पर भी विधि-निषेध करना होता है। विधि-निषेध अलग-अलग जीव के लिए अलग-अलग तरह से किया जाता है परन्तु अधिकतर कम अवधि के लिए होता है। इस तरह के जीवन दर्शन के कारण गालो में शिकार मनोरंजन के लिए या व्यवसाय के लिए नहीं किया जाता। इन सब कारणों से ही गालो में अंधाधुंध शिकार या जीव हत्या नहीं होती। सदियों से इसी तरह के दर्शन के कारण ही जीवन व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं।

सारांश के रूप में कह सकते हैं कि गालो दर्शन में बहुत अच्छे गुण है जिसे अन्य लोग भी अपना सकते हैं। इसमें समरसता और सौहार्द की भावना है। गालो व्यक्ति बहुदेववादी होने के कारण सभी धर्मों को और ईश्वरों को अपनाने में झिझकते नहीं। सभी के लिए आदर और सौहार्द का भाव रखते हैं। प्रकृति के साथ रहने के कारण, प्रकृति से जीवन पाकर प्रकृति के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहते हैं। इसीलिए प्राकृतिक वस्तुओं को प्रतीक के रूप में पूजा करते हैं। शायद जीव-जन्तुओं के संरक्षण के लिए ही इसके मालकिन (देवी/यापोम) का परिकल्पना भी की होगी। यापोम-याजे के डर से ही सही जीव-जन्तुओं का भी संरक्षण हो जाता है। निष्कर्षत: यही कह सकते हैं कि गालो दर्शन एक उदार दर्शन है। यह सबका साथ, सबका विकास वाली नीति के लिए प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रथ:

1. दर्शन कोश, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८८
2. गालो लोक-जीवन और संस्कृति –सिराम जुमसी
3. Myths from North East India: Functional Perspective of Galo Myths in Changing Context, Doye Ili, Nation Press, New Delhi, 2018
4. The Gallongs, Srivastava L.R.N, Director of Research, Itanagar, 1988
5. दर्शन का अर्थ – Google, १०/११/२०१८